व्याख्या Could.
ऐसा मान लेना चाहिए।

अर्थात् जहाँ शुद्ध अन्तर्मन स्वीकारोक्ति प्रदान करे, उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। राजा शकुन्तला को पाना चाहता है किन्तु एक राजा का धर्म है यह विवेक का अनु-पालन करे। सब वर्णों में एक क्षत्रिय का विवाह उस समय संभव नहीं था, साथ ही राजा को यह विदित भी नहीं है कि शकुन्तला किसकी पुत्री है अतः राजा अन्तर्मन की बात मानकर शकुन्तला को ग्राह्य बना लेता है। कवि राजा के शुद्ध अंतःकरण को एक प्रामाणिक रूप भी देते हैं।

आगे चलकर यह यथार्थ में संभव हुआ। यह राजा के चारित्रिक पक्ष को भी बल प्रदान करता है। राजा आसानी से शकुन्तला को पा लेने की भी कामना कर लेता है। संकल्प - विकल्पात्मक है मन। यदि सही ढंग से इसे आँका जाय तो यह तत्व बोध भी कराता है।

कालिदास ने अपने नायक को अपने मानदण्ड में साधा है और सौन्दर्य के प्रति उसके सहज आकर्षण को भी विवेक से बाँधा है। कोई भी काव्य समाज को मार्गदर्शन देता है और सहजता के बीच उसकी मर्यादा भी बनी रहती हो तो काव्य की ख्याति निश्चित होती है। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' आज भी लोकप्रिय है - इसका सहज कारण कालिदास की विचारशील वर्णन शैली है।
व्याकरण - छन्द, अलंकार, व्युत्पत्ति।

Scanned with CamScanner

(2) अर्थ स्पष्ट करें -

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।

अर्थात् सरसिज या कमल सेवार से घिरे होने पर भी (अनुविद्धं) रमणीय या सुन्दर है। मलिन होने पर भी (चंद्रमा में कलंक होने के कारण भी) चंद्रमा का कलंक उसकी श्री प्रदान करता है (श्री - शोभा, श्री - लक्ष्मी)।
वैसे ही यह सुन्दरी भी वल्कल धारण करने पर भी अधिक मनोहारी (मनोज्ञा) जान पड़ती है या दिखलाई पड़ती है। वास्तव में सुन्दर आकृतियों पर सब कुछ अच्छा लगता है। (उन्हें आभूषण की क्या आवश्यकता?)

Uma Pandey
Skt. Deptt.
B.A. II Content